अध्याय :- ५

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भारत विभाजन का निरूपण : शिल्प के परिप्रेक्ष्य में

अनुक्रमणिका

५. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भारत विभाजन का निरूपण : शिल्प के परिप्रेक्ष्य में

☞ ५. १. अज्ञेय

५. १. १. शरणदाता : (अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ)

५. १. २. लेटरबक्स : "

५. १. ३. बदला : "

५. १. ४. रमन्ते तत्र देवता : "

५. १. ५. मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई : "

५. १. ६. नारंगियाँ : "

☞ ५. २. विष्णु प्रभाकर

५. २. १. मेरा वतन : (सिक्का बदल गया)

५. २. २. अगम अथाह है : (मेरा वतन)

५. २. ३. अधुरी कहानी : "

५. २. ४. मेरा बेटा : (मेरा वतन)

५. २. ५. तांगेवाला : "

५. २. ६. सफर का साथी : "

५. २. ७. वह रास्ता : "

५. २. ८. पडोशी : "

५. २. ९. आज़ादी : "

५. २. १०. हिन्दू : "

५. २. ११. मैं जिंदा रहूंगा : "

५. २. १२. शमशू मिस्त्री : "

५. ३. भीष्म साहनी

५. ३. १. अमृतसर आ गया है : (सिक्का बदल गया)

५. ३. २. निमित्त : "

☞ ५. ४. उपेन्द्रनाथ अश्क

५. ४. १. चारा काटने की मशीन : (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ)

५. ४. २. ज्ञानी : (सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ)

५. ४. ३. टेबूल लैण्ड : "

☞ ५. ५. मोहन राकेश

५. ५. १. मलबे का मालिक : (सिक्का बदल गया)

५. ५. २. परमात्मा का कुत्ता : (वारिस)

५. ५. ३. कम्बल : "

५. ५. ४. क्लेम : (क्वार्टर)

☞ ५. ६. चन्द्रगुप्त विद्यालंकार

५. ६. १. मास्टर साहब : (मेरी प्रिय कहानियाँ)

५. ६. २. पतझड : "

☞ ५. ७. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

५. ७. १. चौडा छुरा : (पोली इमारत)

५. ७. २. दो जख आग : (मुक्ता)

५. ७. ३. मलंग : (यह कंचन सी काया)

५. ७. ४. खुदा के सामने : (ऐसी होली खेलो लाल)

५. ७. ५. दोजखःनरक : "

५. ७. ६. शाप : "

☞ ५. ८. चतुरसेन शास्त्री

५. ८. १. रजील : (मेरी प्रिय कहानियाँ)

५. ८. २. लम्बग्रीव : "

☞ ५. ९. कमलेश्वर

५. ९. १. जिन्दा मुर्दे : (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ)

५. ९. २. कितने पाकिस्तान : "

५. ९. ३. धूल उड़ जाती हैं : (राजा निरबंसियाँ)

५. ९. ४. भटके हुए लोग : "

☞ ५. १०. कृष्णा सोबती

५. १०. १. सिक्का बदल गया : (सिक्का बदल गया)

५. १०. २. मेरी माँ कहाँ : (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ)

☞ ५. ११. अमृतलाल नागर

५. ११. १. आदमी : जाना-अनजाना : (मेरी प्रिय कहानियाँ)

५. ११. २. आदमी नहीं ! नहीं !! : (एटम बम)

▪ संदर्भ सूची

५. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी में भारत विभाजन का निरूपण : शिल्प के परिप्रेक्ष्य में

अनुभव, संवेदना या लगाव मात्र से ही कोई अच्छी कहानी या कहानीकार नहीं बन सकता। अपने लगावों और अनुभवों की संवेदना की प्रभावाभिव्यक्ति भी जरूरी है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी लेखकों ने अपनी कहानियों में भाषा का खुल्ला प्रयोग किया हैं। कथा, स्थान और पात्रों के अनुभव भाषा का चयन कहानी को चार चाँद लगाता हैं। जहाँ लोक जीवन से संबंधित कथानक है वहाँ क्षेत्रीय शब्दावली को यथावत स्वीकार किया गया है। कुछेक कहानीकारों ने कहीं-कहीं अल्प प्रयोगी या द्विवलुक्त प्राय शब्दों का भी प्रयोग अपनी कहानियों में किया हैं।

शैली की दृष्टि से यह सम्पन्न कहानी साहित्य रहा। आत्मकथात्मक, हास्य-व्यंग्य प्रधान, नाटकीय, वर्णनात्मक, पत्रात्मक, संवादात्मक, मनोविश्लेषणात्मक आदि शैलियों का बखुबी प्रयोग किया गया। कहीं-कहीं संस्कृत की सूक्तियाँ भी ध्यानाकर्षित है। उद्धरणात्मक, विवेचनात्मक एवम् ध्वन्यात्मक शैली का प्रयोग देखते ही बनता हैं।

बिंब-प्रतिकों का प्रयोग भी बेजोड़ रहा हैं। प्रतिकों के माध्यम से कथ्य स्पष्ट किए गए है।

कहावतें-मुहावरें का प्रयोग कहानियों के कथ्य को और भी प्रभावक व मार्मिक बना देता है।

कुछेक कहानियों में विवरणों के उलझाव से रचना बोजिल बन गई है। विवरणों की अधिकता सम्प्रेषणियता में खतरा उपस्थित करती है।

समग्रतः शिल्प की दृष्टि से स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी साहित्य शोधलक्षी और पठनीय रहा है।

विभाजन के कारण उत्पन्न परिस्थितियाँ साम्प्रदायिक दंगे, मानवमूल्यों का विघटन, स्थिति सापेक्षक्रुर मानसिकता बोध, अपने मूल्यों से उखडे हुएँ आदमी की वेदना और करुणा आदि विषयों पर समकालीन कहानीकारों ने कई श्रेष्ठ कहानियाँ लिखी। उनमें पुरानी पीढ़ी के

कहानीकार भी थे और युवा पीढ़ी के कहानीकार भी। जिनमें अज्ञेय कृत- 'शरणदाता', 'लेटरबक्स', 'बदला', 'रमन्ते तत्र देवता', 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई', 'नारंगियाँ' (अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ), विष्णु प्रभाकर कृत- 'मेरा वतन' (सिक्का बदल गया), 'अगम अथाह है', 'अधुरी कहानी', 'मेरा बेटा', 'तांगेवाला', 'सफर का साथी', 'वह रास्ता', 'पडोशी, आजादी', 'हिन्दू', 'मैं जिंदा रहूंगा', 'शमशू मिस्त्री' (मेरा वतन), भीष्म साहनी कृत- 'अमृतसर आ गया है', 'निमित्त' (सिक्का बदल गया), उपेन्द्रनाथ अश्क कृत- 'चारा काटने की मशीन' (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ), 'ज्ञानी', 'टेबूल लैण्ड' (सत्तर श्रेष्ठ कहानियाँ), मोहन राकेश कृत- 'मल्बे का मालिक' (सिक्का बदल गया), 'परमात्मा का कुत्ता', 'कम्बल' (वारिस), 'क्लेम' (क्वार्टर), चन्द्रगुप्त विद्यालंकार कृत- 'मास्टर साहब', 'पतझड' (मेरी प्रिय कहानियाँ), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' कृत- 'चौडा छुरा' (पोली इमारत), 'दो जख आग' (मुक्ता), 'मलंग' (यह कंचन सी काया), 'खुदा के सामने', 'दोजखःनरक', 'शाप' (ऐसी होली खेलो लाल), चतुरसेन शास्त्री कृत- 'रजील', 'लम्बग्रीव' (मेरी प्रिय कहानियाँ), कमलेश्वर कृत- 'जिन्दा मुर्दे' (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ), 'कितने पाकिस्तान', 'धूल उड जाती हैं', 'भटके हुए लोग' (राजा निरबंसियाँ), कृष्णा सोबती कृत- 'सिक्का बदल गया' (सिक्का बदल गया), 'मेरी माँ कहाँ' (भारत विभाजन : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियाँ), अमृतलाल नागर कृत- 'आदमी : जाना-अनजाना' (मेरी प्रिय कहानियाँ), 'आदमी नहीं ! नहीं !!' (एटम बम) आदि कहानियाँ भारत-पाकिस्तान के विभाजन के कारण हुएँ साम्प्रदायिक दंगों की विभिन्न स्थितियों को उजागर करती है। इन सारी स्थितियों का मार्मिक एवम् हदय-विदारक चित्र इन कहानियों में दृष्टिगत होता है। जिसका शिल्प बडा कलात्मक एवम् सौंदर्यशील रहा है। भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखी गई कहानियों का शिल्प यहाँ पर प्रस्तुत किया गया है।

अज्ञेय शुरू से ही क्रांतिकारी आंदोलनों में जूडे रहे है। देश की स्वतंत्रता के लिए उन्हें चार साल का कारावास भी भुगतना पडा था। अज्ञेय ने कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, यात्रावृतांत, काव्य नाटक और आलोचना के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं। 'नदी के द्वीप' और 'शेखर एक जीवनी' उनके प्रसिद्ध उपन्यास है। उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार और

'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्रदान किएँ गये हैं। अज्ञेय का पुरा नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायन है। उनकी प्रस्तुत कहानियाँ 'शरणदाता', 'बदला', 'लेटर बक्स', 'रमन्ते तत्र देवता' एवम् 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई' यह सभी कहानियाँ भारत-पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी पर लिखी गई हैं। सभी कहानियों की मुख्य कथा का विषय स्वतंत्रता के बाद भारत-पाकिस्तान विभाजन के आस-पास का रहा है।

कहानियों के विवेचन में 'शरणदाता' कहानी में एक ऐसे हिन्दू की कथा है जो हिन्दू-मुस्लिम दंगे में फस जाता है। दोस्त के यहाँ शरण लेता है पर वह दोस्त उसे दूसरे दोस्त के यहाँ भेजता है। और उसका दोस्त उनको मारने की कोशिष करता है मगर जैबुनिसा जो पनाह देने वाले व्यक्ति की लडकी थी, वह उसे बचा लेती है और वह बच जाता है। जब की अज्ञेय की दूसरी कहानी 'बदला' में एक सिक्ख की कथा है जिसके बीबी-बच्चों की हत्या दंगे में हो जाती हैं। वह उसके साथ हुआ ऐसा किसी के बीबी-बच्चों के साथ न हो उस उद्देश्य से उन्हें सही सलामत पहुँचाने का काम करता था। वह एक मुस्लिम युवती को बचाता है। उज्ञेय की 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई' कहानी में तीन मुस्लिम युवतियों के साथ हुए अत्याचार की घटना हैं। जो स्पेश्यल ट्रेन से पाकिस्तान जाना चाहती थी परंतु ट्रेन में बेठे बडे-बडे अफसर जो मुसलमान ही थे लेकिन वह उनकी मदद करने से इन्कार कर देते है और उनसे बुरा व्यवहार करते है। उनकी 'लेटर बक्स' कहानी बहुत ही संवेदनात्मक कहानी है। जिसमें लेखक लेटर बक्स मे अपने लेटर डाल ने जाते है वहाँ पर एक छोटा लडका पोस्ट कार्ड लिये खडा होता है। वह पोस्ट कार्ड डिब्बे में डालना चाहता है। वह अपने अब्बा को भेजना चाहता था। मगर उसे पत्ता मालुम नहीं था। उसके अब्बा उनसे दंगों के कारण बिछड़ जाते है और उनकी अम्मी को आक्रमणकारियों ने मार डाला था। उस बेबस बच्चे की स्थिति को बताया गया है। अज्ञेय की अंतिम कहानी 'रमंते तत्र देवताः' में एक सिक्ख की कथा है। जो अचानक फैले दंगे में एक बंगालन स्त्री की मदद करता है। वह अपने पति से बिछड जाती है। उसे अपने घर लाता है जहाँ पर वह अपनी विधवा बहन के साथ रहता है। वह एक रात उनके साथ गुरद्वारे में रहती है। दूसरे दिन सिक्ख उसे उसके घर पहुँचाने जाता है मगर उसका पति उसका स्वीकार करने से मना कर देता है। और बाद में गुरद्वारे साथ में गये सिक्खों को देख मान जाता है।

अज्ञेय की पाँचों कहानियों में पारिवारीक समस्या, दंगे फसाद की समस्या, उँच-नीच के भेद-भाव की समस्या को प्रकाशित करते हुए समाज के सामने रखने का प्रयास किया गया हैं। कहानियों का शिल्प भी बडा प्रभावक रहा हैं।

कहानी के शिल्प को आकर्षक बनाने के लिएँ अज्ञेय ने भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखी गई 'शरणदाता', 'बदला', 'लेटर बक्स', 'रमन्ते तत्र देवताः' एवम् 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई' आदि अपनी कहानियों में प्रयुक्त कहावतें-मुहावरें, बिंब-प्रतीक, उर्दु, अरबी-फारसी, तत्सम्-तद्‌भव, अंग्रेजी और देशज आदि शब्दों का प्रयोग बखुबी ढ़ंग से किया हैं।

'शरणदाता', 'बदला', 'लेटर बक्स', 'रमन्ते तत्र देवताः' एवम् 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई' आदि कहानियों में कबूलते, मुहल्ले, खामखाह, सखरा, हिफाजत, मुल्क, खाक, यकिन, खैर, बहुतायत, खिसक, गजर, अहाता, इन्जाम, खुाद, गिरोह, मोज़ंग, गिरस्ती, हुल्लड, उमस, पनाह, इज्जत, घायल, निबाहा, इलाके, रूखाई, ईन्सान, बेवकुफी, विदा, जोखिम, नामुमकिन, फाटक, बरजिश, अमन, फिरकायरस्ती, जहर, परोसना, जुठ़न, हाकिज, मजलम, अकलीयत, लिफाफा, कराह, आलोचना, निनिमेष, आश्वासन, व्यवस्था, लक्ष्य, स्मृतिपटल, प्रातः, विरक्ति, स्वर, वीरान, विषावत, क्षति, आपास-पूर्वक, ढ़िढ़क, पाकपरवरदिगार, अलगाव, कमबख्त, वक्त, सफर, हमदर्दी, मुसीबत, दर्द, शर्म, महाशय, बेइज्जती, शरीफ, मुखातिब, रूखाई, मोर्चे, मक्सद, जबान, काबिल, बेदर्द, इशारे, कसर, नजात, तकरीहन शब्दों का प्रयोग हुआ है। स्वयं, अमानुषी, अलगा, लक्ष्य, स्वर, संयत, अप्रतिभ, स्पष्ट, अंगडाई, दिलचस्पी, अनुगूज, टिकाऊ, परमात्मा, तिरस्कारपूर्ण, तरस, मुद्रा, कमीनापन, काफिले, अफवाह, उर्स, इकट्ठे, मुलाजिम, अफसर, खाविद, बंदरगाह, पलटन, चैन, जनाना, हैसियत, किवाड, बेशर्म, पाकदामन, अफसरी, गुमान, कमाई, शर्म, खुाद, खौफ, दुर्घटना, परिचितों, उत्सुक, रूआंसी, कबंध, मुस्करा, केन्द्रित, आरजो, अनोखा, अस्पस्ट, प्रतिक्षा, कौतुहल, धैर्य, कुल्हाडी, जंग, काठिन्य, बरामदे, तनिक, मरोड, सीमाहिन, सिहरता, पहरेदार, जीवनप्रणाली, अनुल्लंव्य, ज़ुकाम, कष्ट, नागरिक, फेफडा, रूपक, स्वगित, व्यस्त, रागात्मक, खराबान, तजरूबा, नस्ल, साबिका, मजलूम, ख्याल, खिसियाकर, पच्छ, नुक्स, आवेश, हैवान, ईबाद, बहस, कर्ज, इलाका, कत्ल, स्तब्ध,

सरका, फौरन, मुस्कान, जात, शरम, सकुजी, उन्मुख, मुमकिन, बिस्तरा, सदमा, दुतकारी, तौलते, तसल्ली, देहरी, फैलते, कमीने, तरीका, बुजदिली, वजूहात, बेबसी, अजीब, मराहूर, बोझीला, नफरत, तोहमत आदि उर्दू, अरबी, फारसी, तद्भव-तत्सम् और देशज शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

मेजारिटी, माइनारिटी, बैंक, ट्रंक, स्टेटोस्कोप, रेलवे, ड्राइवर, गैराज, हेड़क्लर्क, पुलिस, रेडियों, डिब्बे, सीट, स्टेशन, हैंडिल, ट्रेन, बर्थ, गाडी, टिकट, स्पेश्यल, अफसर, चैन, पलटन, फंटियर, थर्ड, सीट, सेकंड क्लास, प्रोग्राम, मिनट, मनीबेग, टेक्सी, ट्राम, ट्रस्टी, मीटिंग, मशीन, एक्सीडेन्ट, साइकोलोजी, कैंप, ड़ायरी, लेटर बक्स, टीन, बक्स, फर्श, पोस्ट कार्ड, रेलिंग इत्यादि अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

अज्ञेय की कहानियों में कहावतें-मुहावरें का प्रयोग भी बेजोड रहा हैं। जो कहानियों के शिल्प की सुन्दरता में चार चाँद लगा देता है। अज्ञेय की उक्त कहानियों में प्रयुक्त कहावतें एवम् मुहावरें 'खुदा न करे खतरे की बाद हो', 'निनिमेष आँखे', 'खुदा जिसे घर से निकालता है, उसे गली में भी पनाह नहीं देता', 'जीवन स्थगित हो जाना', 'मसला हल न होना', 'देखते ही उछलना पडना', 'वातावरण बोझील होना', 'बला नहीं बलाओं की माँ', 'काढ़ी कसकर जम गएँ', 'ईट का जवाब पत्थर से देना', 'मुँह से बोल न निकलना' आदि कहावतें और मुहावरों का प्रयोग कहानियों में मिलता हैं।

अज्ञेय की कहानियों में संवादों का प्रयोग भी पात्रानुकूल और उपदेशात्मक, भावात्मक तथा प्रभावोत्पादक हुएँ है। जैसे कि 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई' कहानी के संवाद- "मुसीबत के वक्त, मदद न करे तो कम से कम और को तो न सतायें। हमें स्पेश्यल ट्रेन से क्या मतलब? हम तो यहाँ से जाना चाहते है जैसे भी हो। इस्लाम में तो सब बराबर है। इतना गरर-या अल्लाह।"[१] प्रस्तुत संवाद अमिना कहती है। उनकी दूसरी कहानी 'बदला' के संवाद भी संवेदात्मक रहे है। जैसे "औरत की बेइज्जती औरत की बेइज्जती है, वह हिन्दू या मुसलमान की नहीं, वह इन्सान की माँ की बेइज्जती है।"[२] उसी कहानी का दूसरा संवाद जो देश में फैले आतंक की प्रतिति करवाता है। जैसे कि "देश में बिमारी फैली है, वह अपने शिखर पर पहुँच गई-और जब तंदुरस्ती का रास्ता शुरू होगा।"[३] अज्ञेय की 'शरणदाता' कहानी

के संवाद बहुत लंबे-लंबे प्रयुक्त हुएँ है। कहानी की कथावस्तु को संवादों के माध्यम से बताया गया है। कहानी आकार में बडी है। 'शरणदाता' कहानी के कुछेक संवाद और वाक्यांश "खुदा जिसे घर से निकालता है, उसे फिर गली में भी पनाह नहीं देता।"[४] "देविन्दरलाल ने जाना की दुनियाँ में खतरा बुरे की ताकात के कारण नहीं, अच्छे की दुर्बलता के कारण है। भलाई को साहस हीनता ही बडी बुराई है। घने बादल से रात नहीं होती। सूरज के निस्तेज हो जाने से होती है।"[५] अज्ञेय की 'लेटर बक्स' कहानी संक्षिप्त है। कहानी का उद्देश्य लेखक ने वर्णनात्मक ढ़ंग से बताया है। संवादों का प्रयोग कम मात्रा में बताया है। 'लेटर बक्स' एक संवेदनात्मक कहानी है। जैसे- "सीमाहीन धैर्य का भाव उसके चेहरे पर लौट आया है कि शायद अब मेरे बाद जो चिट्ठी छोड ने आये वह मुझसे अधिक जानता हो और उसे बतादे की वह अपनी चिट्ठी किस पते पर छोडे ताकि वह बाबूजी को मिल जाएँ।"[६] कहानी में बालक चित्रण और उसकी दयनीय स्थिति पाठक के मनमें एक अमीट छाप छोड जाती है। 'लेटर बक्स' कहानी से शुरू होकर जल्द ही विकास के साथ अपनी चरमसीमा से अंत तक पहुँच जाती है। 'रमन्ते तत्र देवता' कहानी को अज्ञेय ने शिल्पकार की तरह सजाया है। उसे संवार ने का काम किया है। 'रमन्ते तत्र देवता' एक बडी कहानी है। जिसकी शुरुआत से आखिर तक का सफर धीरे-धीरे बताया गया है। वर्णनात्मक शैली का प्रयोग प्रस्तुत कहानी में हुआ है। पात्र के अनुरूप भाषा का प्रयोग हुआ है। कई जगहों पर व्यंग्यात्मकता भी दिखाई देती है। जैसे कि "हिन्दू धर्म उदार है न, मारता नहीं, मरने का सब तरह से सुभीता कर देता है। इसमें दो कायदे है- एक तो कभी चूक नहीं होती, दूसरा यह तरीका दया का भी है। लेकिन यह बताईये आदमी पशु है तो औरत क्यों देवता है? देवता में जान बुझकर कहता हूँ, क्योंकि इन्सान का इन्साफ तो देवताओं से भी उँचा उठ सकता है। देवता सूद न ले, धेले-पाई की वसूली पूरी करते है कि नहीं?"[७] साथ ही कहानी में लेखक ने उपदेशात्मक वाक्य भी रखे है। जैसे कि- "इन्सान को पहले अपना ऐब देखना चाहिएँ, तभी वह दूसरे को कुछ कहने लायक बना है।"[८]

निष्कर्षतः अज्ञेय की सभी कहानियों में शिल्प अपना आधिपत्य दिखाता ही है। 'शरणदाता', 'बदला', 'लेटर बक्स', 'रमन्ते तत्र देवता' एवम् 'मुस्लिम-मुस्लिम भाई-भाई'

सभी कहानियों में शिल्प का प्रयोग सफल रूप से हुआ हैं। शिल्प के माध्यम से ही कहानी आकर्षक बनती है। शिल्प के बिना कहानी एक विधवा स्त्री की भाँती निरस और निस्तेज प्रतित होती है। शिल्प कहानी को अलंकारिक आभुषण प्रदान करता है।

चंद्रगुप्त विद्यालंकार ने अपनी कहानी 'मास्टर साहब' में एक शिक्षक का आदर्श चरित्र क्या होता है यह स्पष्ट करके समग्र पाठक वर्ग को आकर्षित किया है। साथ ही शिक्षकों को उसके कर्तव्य के प्रति सजग रहने का संकेत इस कहानी में किया है। मास्टरजी साहब भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय फैले तनावपूर्ण वातावरण और लोगों की मानसिक स्थिति का वर्णन करता हुआ एक सजीव चरित्र है। मास्टर साहब अपने पूरे परिवार के साथ गाँव में रहते थे। दंगें-फसादों की खबरे उन्हें मिलती रहती थी परंतु उन्हें गाँव वालों पर पूरा भरोसा था कि उनके या उनके परिवार पर कोई अनहोनी नहीं होगी। मास्टरजी चिंता से ग्रस्त होकर अपने खेत में चले जाते है। वहीं पर सो जाते है। सुबह उठने के बाद उसे कुछ जलता हुआ और आग की लपेटे निकलती हुई दिखाई देती है, जो उनके गाँव के जलने की सूचना देती थी। वह सहसा अपने परिवार के बारे में सोचकर काँप उठते है। घर पर जाकर देखते है तो उन्हें उनके बेटे सत्ती और प्रकाश की लाशे पडी मिलती है और दूसरी तरफ उनकी पत्नी और बडी बेटी सत्यवती की लाशे पड़ी दिखाई देती है। मास्टरजी अपनी पौती निम्मो को खोजते है। बाद में पता चलता है कि जो लोग गाँव लूटने आये थे वह उसे उठाकर ले गये। मास्टरजी उनका पता लगाते है। और उनके घर पहुँच जाते है। जो उनकी पोती को उठाकर ले गया था वह उनका ही विद्यार्थी रह चुका था। जिनके कारण वह मास्टरजी को जिंदा छोड देता है और निश्चिन्त रहने का आश्वासन देता है।

कहानियों के शिल्प को आकर्षक एवम् सौंदर्य प्रधान बनाने के लिए चंद्रगुप्त विद्यालंकार ने भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखी गई 'मास्टर साहब' एवम् 'पतझड़' आदि अपनी कहानियों में प्रयुक्त कहावतें-मुहावरें, बिंब-प्रतीक, उर्दु, अरबी-फारसी, तत्सम्-तद्भव, अंग्रेजी और देशज आदि शब्दों का प्रयोग किया हैं। जैसे कि- कस्बा, परिन्दे, पैमाने, सूदूर, खून, प्यास, अफवा, फारसीदा, मनहूसियत, मुहल्ले, इन्जाम, मुकाबला, बेपरवाह, फकीर, तलाश, कालिमा, फूरसत, दस्तक, अजीत, निगाह, पैगाम, खोजती, हिफाजत, काफिर, तूफान,

शुक, खुाद आदि उर्दू, अरबी-फारसी शब्दों के साथ तद्भव-तत्सम् और प्रान्त विशेष की भाषा के शब्दों का भी प्रयोग मिलता हैं। जैसे- सुरुचिपूर्ण, कलात्मकता, समाप्त, छितराये, विद्यमान, व्याप्त, प्रकृति, प्रभात, प्रतित, सुरक्षित, उझलापन, क्षितिज, कदापि, महानाद, त्रासदायक, केन्द्रिय, सत्यमेव्, सद्भिभाषाएँ, अप्रतिष्ठित, द्रविभूत, निर्जीव, देह, असमर्थता, सन्नाटा, ठिठक, ज्वाला, भावोत्पादक, आभास, प्रविष्ट, निष्प्राण, निःस्पन्द, निष्क्रिय, अत्यंत, करूण-स्वर, चेतना, क्षत-विक्षत, सन्न, शोकमग्न, धूलि-धूसरित, प्रबंध, महाप्रलय, परायण, आक्रमणकारी, कायाकल्प, परीक्षा, उत्तेजना, पगदंडी, सत्यमेव्, तर्जनी, निश्चय, स्वागत, विचार-शक्ति, प्रतिशोध, संज्ञाहीन, अप्रत्याशित, शीघ्र, व्यथा इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ है। प्रस्तुत कहानियों में उर्दू, फारसी, अंग्रेजी शब्दों की तुलना में तत्सम्-तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ हैं। साथ ही साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी हुआ हैं। जैसे- टेकनीक, रेल्वे स्टेशन, मील, बन्डल, मास्टर आदि शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। प्रस्तुत कहानियों में लेखक ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग बहुत कम किया हैं। लेखक ने तद्भव और तत्सम् शब्दों की तुलना में उर्दू शब्दों का प्रयोग भी बहुत कम किया हैं।

कहानी के शिल्प को आकर्षित बनाने के लिएँ कहानीकार ने कहावतें-मुहावरें एवम् शैलियों का प्रयोग किया हैं। 'खून का प्यासा होना', 'दुनिया की तबाही होना', 'दिमागी राहत को ठोकर लगना', 'सर पर आना', 'महाकाल की बेला सर पर आना', 'हद्य को झंकझोर ना' इत्यादि कहावतें एवम् मुहावरें का प्रयोग हुआ है।

प्रस्तुत कहानी 'मास्टर साहब' में कई जगहों पर भावनात्मक शैली एवम् संवादों का प्रयोग किया गया है। जो पाठक वर्ग को पूरी तरह से झंकझोर देता है। जैसे कि जब मास्टरजी घर जाकर सबका शव देखते है मगर निम्मों नहीं दिखाई देती और वह चीख उठते है। वह संवाफ करूणा और संवेदना की चरम-सीमा की प्रतिति कराता है। जैसे "बूढ़े मास्टर की बेहोश होती हुई चेतना खुद-ब-खुद लौट आई। वे अत्यंत करूण-स्वर में चीख उठे- निम्मो। निम्मों। निम्मों। पर कहीं से कोई जवाब नहीं मिला।"[१] लेखक ने इन सब के साथ साथ फकीर के लिए बहुत अच्छा वर्णन किया है। प्रस्तुत कहानी में यह वर्णन पाठक वर्ग के लिएँ उपदेशात्मक वर्णन भी कहा जा सकता है। "एक फकीर जो न हिन्दू होता है और न मुसलमान। यह फकीर

बने है तब हो सकता है जब वह इस दूरी को, इस भेद-भाव को एकदम भूल जायें।"[१०] लेखक ने अपनी कहानियों को शिल्प की दृष्टि से बहुत कम सजाते हुए मूलतः अपने उद्देश्य को बताने का प्रयास किया है। लेखक ने सीधी-सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके ही कहानी का उद्देश्य समाज के सामने रख दिया है।

अन्य कहानीकारों की तरह अपनी कहानियों की कथा को बताने के साथ अपना पाण्डित्य प्रदर्शन नहीं किया हैं। फिरभी कहीं-कहीं पर कहानी का शिल्प अपने आप उभर कर आता है। कहानीकार ने जितना भी शिल्प का प्रयोग किया बहुत प्रबल वर्णन किया है। निष्कर्षतः प्रस्तुत कहानियाँ 'मास्टर साहब' एवम् 'पतझड' लेखक की उत्कृष्ट कहानियाँ हैं। चंद्रगुप्तजी ने सन् १९४७ के आंदोलन की घटना को लेकर अध्यापक के आदरणीय स्वरूप का चित्र उपस्थित किया है। शिक्षक का स्वरूप व उसका स्तर कितना महान है, समाज के लिए वह कितना उपयोगी व्यक्ति है, इस तथ्य को कहानी का रूप देकर श्री चंद्रगुप्त ने अध्यापक जीवन के आदर्श की ओर पाठकों को आकर्षित किया हैं। साथ ही शिक्षकों को भी उसके कर्तव्य के प्रति सजग रहने का संकेत किया हैं। यदि शिक्षक अपने कर्तव्य में निष्ठा के साथ लगा रहे तो उसके सम्मान में कभी कोई कमी नहीं आ सकती। साहित्यिक और सुरुचिपूर्ण शैली के कारण इस कहानियों में कलात्मकता आ गई हैं। उद्देश्य एवम् शिल्प की दृष्टि से यह कहानियाँ सफल रहीं हैं।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने अपनी कहानी 'रजील' में हाजी साहब और उनके परिवार की बात बताई है। जो भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय अपनी पत्नी और बेटियों के साथ अमृतसर से लाहौर आने के लिए एक सरदारजी की मोटर किराये पे रखते है। वह जिस मोटर किरायें पर रखता है इस मोटर में हमीदन वैश्या भी बैठी होती है। हाजी साहब और उनका परिवार मोटर में बेठने से इन्कार करता है। परंतु इस समय ऐसी परिस्थिति आ खडी है कि उसे अंत में झुकना पडता है और वह रजील बाजारू औरत के साथ बैठ ने के लिएँ तैयार हो जाते है। रास्ते में कई आकांता उसे मिलते है और एक जवान औरत को उसके पास छोडने बदले बाकी सब औरों की जान बख्श देने की शर्त रखते है। तभी वह रजील बाजारू औरत इनके पास बैठने से हाजी साहब और उनका परिवार कतराता था, वह औरत आज उनकी

बच्चियों की ईज्जत बचाने के लिए काम आती है। वह उस आक्रांतियों के पास रूक कर हाजी साहब और उनके परिवार को लाहौर जाने को कहती है। फिर कुछ दिनों बाद हमीदन लाहौर हाजी साहब के पास उस समय दी हुई अपनी अमानत लेने को आती है। तो हाजी साहब उसे पहचान ने से इन्कार कर देते है। लेखक ने हाजी साहब जैसे अहसान फरामोश व्यक्तियों पर करारा व्यंग्य किया है। जब कि हमीदन जैसी बाजारू औरत भी अपना फर्ज समज कर हाजी साहब जैसे लोगों की मदद करती है।

शास्त्रीजी ने अपनी कहानी का शीर्षक ही 'रजील' रख्खा है। जो कहानी कि कथावस्तु को पढ़ने के लिए आकर्षित करता है। जिस तरह से कहानी का शीर्षक बहुत छोटा है उसी प्रकार कहानी की कथा भी छोटी है। कहानी को सौंदर्यता प्रदान करने के लिए लेखक ने शिल्प का बेजोड सहारा लिया है। कहानी में अंग्रेजी शव्द की तुलना में उर्दू, अरबी-फारसी, तत्सम् और तद्भव एवम् प्रान्त विशेष भाषा के शव्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। कहानी की कथा लाहौर और अमृतसर के बीच की है। साथ ही एक मुस्लिम परिवार को केन्द्र में रख्खा गया है। जिसके कारण अंग्रेजी शव्दों की तुलना में उर्दू शव्दों का आधिपत्य होना स्वभाविक हैं।

कहानियों में उर्दू, अरबी-फारसी, तत्सम् और आँचल विशेष की भाषा कें शव्दों का प्रयोग हुआ है। जैसे- अजब, वक्त, बर्बाद, बखुदा, मिहरबान, गिरोह, इज्जत, खानदान, खण्ड़हर, ख्याति, जनाब, आलीशान, नाहक, जोखिम, आमदा, अस्मत, नजदीक, हुज्जत, कबीले, उम्र, सहूलियत, अफसोस, जालिम, कसर, हर्फ, साहिबा, बेगम, बेहोश, रईस, मशहूर, पर्दानशील, आक्रांता, कल्मा, सवारियाँ, मर्द, कसम, हिकारत, बौखलाहट, चितकदरी, आरजू, नकदी, शरीफ, फर्ज, बहस, ईमान, अर्दली, तनजेव, मसन्द, दयानतदार, मुखातिब, खुाद हाफिज, बेखबर, आफरी, निगाह, खम्बरी, सुलग, मसलें, खिदमतगार, पेचवान, निहायत, खुशोखुर्रम, इनायत, मुगालते, गवाह, हराम, हज्म, मरासी इत्यादि शव्दों का प्रयोग हुआ हैं। साथ-ही-साथ तत्सम् एवम् देशज शव्दों का प्रयोग भी कहानियों में मिलता हैं। जैसे कि- धांय-धांय, ढ़ह-ढ़ह, चेष्टा, विक्षिप्त, प्रत्येक, शस्त्र, खुरपी, लट्ठ, अनुनय, विपक्षियों, विद्वेष, मुमूर्षु, असह्य, यन्त्रणाएँ, आततायी, अट्टालिका, ध्वस्त, आगन्तुक, गिरोह, ज्योत्सना, बीभत्स, सिकुड़ी, अर्जित, किरपाण, यात्री, यत्किचित, सतश्री अकाल, प्रतिज्ञा,

वास्तव, बलैयाँ, देवदूत, मृदुल, स्वर, आश्वासन, पाशविक, अट्टहास आदि शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

प्रस्तुत कहानियों में अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। जैसे- ड्राईवर, रिवाल्वर, गाड़ी, स्टार्ट, टार्च आदि शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। प्रांतीय स्थल और अनपढ़ यानी अशिक्षित लोगों के वर्णन के कारण अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग बहुत कम मिलता हैं। प्रस्तुत कहानियों में कहावतें-मुहावरें का प्रयोग भी हुआ हैं। शिल्प के अंतर्गत सबसे पहली बात भाषा की आती है, भाषा के माध्यम से कहानी की कथा सरल और सहज बनती है। कहानी को भाषा से सजाने के बाद उसमें कहावतें-मुहावरें इत्यादि आभुषणों से सजाया जाता हैं। जैसे कि- 'खतरे के मुँह में बैठना', 'मौत के मुँह में मत ढ़केलों', 'साप की तरह फुककार मारना', 'आँखों में खून उतरना', 'जान के लाले पडे हो', 'खून के प्यासे होना', 'हराम की कमाई खाना' आदि कहावतें-मुहावरें का प्रयोग हुआ है। कहानी की कथावस्तु को प्रवाहमयी बनाने के लिएँ कई जगहों पर प्रभावोत्पादक संवादों का प्रयोग हुआ हैं। जैसे कि- "एक ही सप्ताह में सब रंग बदल गया था। हाजी साहब तनज़ेब का कुर्ता पहने मसन्द पर पडे पान कचर रहे थे। सिर पर बिजली का पंखा सराँटे बन्द चल रहा था। खम्बरी तम्बाकु पेचवान में सुलग रहा था। जिसकी महक से कमरा बाग-बाग हो गया था। नवाब मुईनुदीन साहब भी खसुर की अर्दली में एक आराम कुर्ती पर पडे सिगरेड के कश खींच रहे थे। हाजी साहब के चेहरे और रंग-ढ़ंग से यह पता ही नहीं लगता था कि उन पर कोई भारी विपत्ति टूटी चुकी हैं।"[११] साथ ही कहानी के संवाद बहुत लंबे तो कई जगहों पर सारी कहानी के हार्द को व्यक्त करता है। जो पूरी कहानी का उद्देश्य अपने संवादों में प्रयुक्त हो जाता हैं। जैसे कि- "हमीदन ने भी दो टूक कहा 'मतलब यह कि मेरी गढ़री मुझे इनायत कीजिएँ।'

'गढ़री ? कैसी गढ़री?'

'जो मैने आपको सोंपी थी।'

'क्या तुम कोई पागल औरत हो बेगम। कब कैसी गढ़री? भई तुम ज़रर किसी मुगालते में पड गई हो। किसी दूसरे आदमी को गढ़री-उढ़री दी होगी। मैं तो तुम्हें जानता भी नहीं। मेरा नाम हाजी.....।"[१२] कहानी में लेखक ने संवाद के माध्यम से हाजी साहब के एहसान फरामोस

व्यक्तित्व को बताया है। हमीदन उनके परिवार को बचाने के लिये खुद का त्याग कर देती है और उनके खानदान की इज्जत बचा लेती है जबकि हाजी साहब उसके अहसानों को भूल जाते है। पूरी कहानी का सार कहानी के अंत में मिलता है। कहानी का अंत बडा ही भावुक और सहानुभूति शील रहा हैं।

इस प्रकार आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने विभाजन पर लिखी 'रजील' एवम् 'लम्बग्रीव' आदि कहानियों में शिल्प को सौंदर्य प्रधान बनाने के लिए प्रयुक्त कहावतें-मुहावरे, बिंब-प्रतीक, उर्दू, अरबी-फारसी, तत्सम्-तद्भव, अंग्रेजी और देशज आदि शब्दों का प्रयोग किया हैं।

निष्कर्षतः चतुरसेन शास्त्रीजी की कहानी 'रजील' एवम् 'लम्बग्रीव' सफल कहानियाँ हैं। पात्रानुकूलता इस कहानियों की विशेषता रही हैं। पात्रों के संवादों में प्रादेशिकता की जलक भी मिलती है। कहावतें और मुहावरें के कारण कहानियों की भाषा प्रभावक रहीं हैं। कहानियों में कथात्मक और वर्णनात्मक शैलियों का प्रयोग हुआ हैं। 'रजील' एवम् 'लम्बग्रीव' कहानियाँ शिल्प की दृष्टि से सशक्त कहानियाँ रही हैं।

मोहन राकेश की प्रस्तुत कहानियाँ 'मलबे का मालिक', 'परमात्मा का कुत्ता', 'कम्बल' और 'क्लेम' यह सभी कहानियाँ भारत-पाकिस्तान विभाजन की त्रासदी पर लिखी गई हैं। सभी कहानियों की मुख्य कथा का विषय स्वतंत्रता के बाद भारत-पाकिस्तान विभाजन के आस-पास का रहा है। कहानियों के विवेचन में 'मलबे का मालिक' कहानी में राकेशजी ने एक ऐसे मुस्लिम व्यक्ति की व्यथा को बताया है जो भारत-पाकिस्तान विभाजन के साढ़े सात वर्ष के बाद लाहौर से अमृतसर आता है। और उसे अपने पुराने अमृतसर को देख पुरानी यादे ताजी हो उठती है। वह अमृतसर में अपने पुराने घर को देखने के लिएँ जाते है जो आज एक मलबे के ढ़ेर के रूप में पडा है। कहानीकार ने एक आदमी को अपने घर और वतन को छोडने ने बाद भी अपने घर और वतन के प्रति उसका लगाव कितनी हद तक होता है यह बताया है। कहानीकार ने इस कहानी में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

कहानी के शिल्प को आकर्षक एवम् सौंदर्य प्रधान बनाने के लिए मोहन राकेश ने भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखी गई अपनी 'मलबे का मालिक', 'परमात्मा का कुत्ता',

'कम्बल' और 'क्लेम' आदि अपनी कहानियों में प्रयुक्त कहावतें-मुहावरें, बिंब-प्रतीक, उर्दू, अरबी-फारसी, तत्सम्-तद्भव, अंग्रेजी और देशज आदि शब्दों का प्रयोग बखुबी ढ़ंग से किया है।

कहानी में अरबी-फारसी, उर्दू, देशज, तत्सम् और तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। जैसे- अफसोस, अल्लाह, हकीम, मलबे, शहतीरों, तब्दीली, बुर्का, बगलगीर, रिश्वत, वाकई, खसम-खाने, सटा, तखते, खुश्क, महसूस, गुस्सा, तकसोम, बदबखती, एहसास, सूरत, पैबन्द, मालिक, बावजूद, कालिख, शक्ल, शागिर्द, जेहाद, तबील, खुमचा, जायदाद, शामत, चिलम, जायजा, अंगाछे, लिहाज, सुस्ताने, तख्ते, मरदूद जैसे उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। कहानी में प्रयुक्त हुएँ तद्भव या तत्सम् शब्द जो मूल रूप से संस्कृत के है, मगर उन शब्दों ने अपना वर्चस्व हिन्दी में भी जमा लिया हैं। कहानी में प्रयुक्त हुएँ शब्द केन्द्र, विभाजन, आशंकित, आगंतूक, प्रतिकिया, संकेत, चेष्टा इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। साथ ही उस प्रांत विशेष की बोली के शब्दों का भी प्रयोग हुआ हैं। जैसे कि- नुक्कड, मढ़ियारिन, भट्ठी, केंचुआ, चोखट, हवन सामग्री, गुराँने, नुस्खे आदि शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। कहानी की कथावस्तु अमृतसर और लाहौर के आस-पास की है। जिसके कारण 'मलबे के मालिक' कहानी में तद्भव-तत्सम्, उर्दू, अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग हुआ हैं।

कहानी के शिल्प को आकर्षक एवम् सौंदर्य प्रधान बनाने के लिए मोहन राकेश ने भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखी 'मलबे का मालिक', 'परमात्मा का कुत्ता', 'कम्बल' और 'क्लेम' आदि अपनी कहानियों में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया हैं। कहानियों में अन्य शब्दों की तुलना में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग बहुत कम मात्रा में हुआ है। जैसे- हाँकी, मेच, कमेटी, फर्श, टेबल, ग्लास, पेन, स्टेशन, टीचर, बर्थ, किचन, येलो, पिंक, ऑफ, सोल्जर आदि।

मोहन राकेश ने अपनी कहानियों के शिल्प को आकर्षक बनाने के लिए प्रयुक्त कहावतें-मुहावरे एवम् शैलियों का प्रयोग किया हैं। जैसे- 'ज्यों कि त्यों', 'बिलखने की-सी आवाज निकली', 'जमीन में गाड देना', 'रीढ़ की हड्डी को सहारा मिलना', 'रात की खामोशी को काटना' इत्यादि कहावतों का प्रयोग हुआ हैं। प्रस्तुत कहानियों में मोहन राकेश ने कहानियों के

शिल्प को अधिक महत्व न देते हुएँ कहानियों के उद्देश्य और कथावस्तु को महत्व दिया है। शिल्प पर कम प्रभाव पडने के कारण कहानियों में थोडा रूखापन नजर आता है। कहानियों के संवाद भी बहुत संक्षिप्त रहे हैं। कहानीकार ने पात्रों के बीच संवादात्मक शैली का प्रयोग न करके वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है। कहानियों के पात्र आपस में बात-चीत न करके कहानीकार खुद ही अपने मन की व्यथा और विचारों को प्रकट करते हैं। कहानियों में प्रयुक्त संवाद- "गनी अपने मलबे पर बैठा हैं। उसके शागिर्द रख्खे पहलवान ने उसके पास आकर बैठते हुए कहाँ, मलबा उसका कैसे है? मलबा हमारा है। पहलवान ने झाग से थर-थराई आवाज में कहाँ"[13] लेखक ने कहानी में बताया हैं कि गनी अपने बेटे, बेटियों और पत्नी के बारे में उसीसे पूछता है जिसने उसके बीबी-बच्चों को मार डाला था और उसी रख्खे पहलवान को वह सलामत रहे ऐसी दुआए देता है। पाठक वर्ग के मन में उसकी एक अलग ही छबी उभरकर आती है। गनी के जरिये बोले गये संवाद इस प्रकार है- "तू बता रख्खे, यह सब हुआ किस तरह? गनी किसी तरह अपने आँसू रोककर बोला। तुम लोग उसके पास थे। सब में भाई-भाई की-सी मुहब्बत थी। अगर वह चाहता, तो तुम में से किसी के घर में नहीं छिप सकता था? उसमें इतनी भी समझदारी नहीं थी?"[14] साथ ही गनी मियाँ रख्खे को देखते है तो उसके होठ़ और जबान के बीच फासला महसूस होता है और वह बोल उठता है- "है प्रभु, तू ही है, तू ही है, तू ही है।"[15]

इस तरह से मोहन राकेश ने 'मलबे का मालिक', 'परमात्मा का कुत्ता', 'कम्बल' और 'क्लेम' आदि अपनी कहानियों को शिल्प की दृष्टि से सजाने का प्रयत्न किया हैं।

कहानियों के शिल्प को आकर्षक एवम् सौंदर्य प्रधान बनाने के लिए **उपेन्द्रनाथ अश्क** ने भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखी गई 'चारा काटने की मशीन', 'ज्ञानी' एवम् 'टेबूल लैण्ड' आदि अपनी कहानियों में प्रयुक्त कहावतें-मुहावरें, बिंब-प्रतीक, उर्दू, अरबी-फारसी, तत्सम्-तद्भव, अंग्रेजी और देशज आदि शब्दों का प्रयोग किया हैं। अशक की कहानी 'चारा काटने की मशीन' की कथावस्तु में एक ऐसे परिवार की बात हुई जो भारत-पाकिस्तान का विभाजन हो जाने पर कई भारतीय अपना घर छोडकर पाकिस्तान चले गए थे। तो उनके खाली घरों पर कई लोग अपना कब्जा जमाना चाहते है। यहाँ पर भी एक सरदारजी किसी खाली घर

पर अपना कब्जा जमाना चाहता है। अपने कब्जे का सबूत देने के लिए वह अपनी चारा काँटने की मशीन वहाँ पर रख आता है। मगर जब आता है तब उसे पता चलता है कि वह जिसे अपना घर बनाना चाहता था वह किसी पुलिसवाले का घर था। सरदारजी मूँह लटकाते बेलगाड़ी में मशीन रखकर खुद पैदल चलकर वापस लौट आते है। अश्कजी ने इस बात को मुख्य रखकर बडी कलात्मकता से कहानी का सर्जन किया है। जिस प्रकार कोई स्त्री पर आभूषण पहनाएँ जाए तो उसकी सुन्दरता में चार चाँद लग जाता है उसी प्रकार कहानीकार अपनी कहानियों को शिल्प के माध्यम सौंदर्यता प्रदान करता हैं। जैसे कहानियों में प्रयुक्त उर्दू एवम् अरबी-फारसी शब्दों नामर्द, कब्बा, औरत जात, तहमद, अहाते, खालसा, किल्लत, अनवरत, अखरने, तारीफ, निरीहता, गबरून, मर्दुमी, निरीह, मल्कीयत, मिन्नत, समाजत, ख्याल, नेक, बख्त, पहरे, मुस्तैदी, तडगे, हूजुर, अदालत आदि शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। साथ ही साथ तत्सम्-तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। जैसे- कृपाण, निरीक्षण, यद्यपि, कर्कश ध्वनी, बाहुल्य, आरम्भ, आकांक्षा, भावना रहित, हष्ट-पुष्ट, कदाचित्, प्रस्ताव, आकृति, शरणार्थी इत्यादि। वैसे तो यह शब्दों संस्कृत भाषा के है परंतु इन शब्दों का प्रभुत्व हिन्दी भाषा में भी मिलता है।

अपनी कहानियों के शिल्प को आकर्षक बनाने के लिए उपेन्द्रनाथ अशक ने प्रयुक्त कहावतें-मुहावरें एवम् विविध शैलियों का प्रयोग किया हैं। अश्कजी की कहानियों में अलंकारिकता प्रदान करने के लिए उन्होंने कई तरह के प्रयोग किएँ हैं। कहानियों की कथावस्तु को संक्षिप्त में ही लिखी है। जिससे पाठक वर्ग को समझने में कोई परेशानी न हो। कहानी के संवाद भी संक्षिप्त रहे है। कहानियों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में हुआ है। कहानियों में प्रयुक्त कहावतें तथा मुहावरें जैसे- 'उलटी कलाई मुँह पर रखी और जोर से बकरा बुलाना', 'आव देखा न ताव', 'उल्टे पाँव लौटना' आदि का प्रयोग हुआ है। तो कहानियों में कई जगहों पर आधे ही संवाद बताये गये है। जैसे कि- "हुजूर, इस मकान पर तो मेरा ताला पडा था। मेरा सारा सामान.....। सुट ओ करतारसिंह, मशीन नू बाहर। गरीब शरणार्थी हेन। असां इह मशीन शाली की करनी ए।"[१६] कहानीकार ने कहानियों के शिल्प को बखुबी रूप से सजाया है। 'चारा काटने की मशीन' की मशीन अन्य काहनियों की तुलना

में छोटी रही है। परंतु उसकी संक्षिप्तता ही उसकी सफलता का आधार बनी है। कभी-कभी काहनी का बृहदाकार ही उसके शिथिल बनने की वजह बनता है। कहानी में कहानीकार ने लहनासिंह के माध्यम से उसके जैसे लोगों पर करारा व्यंग्य किया है जो ऐसी परिस्थितियों में भी किसी के घरों को अपना बनाने निकल पडते है। साथ ही अपना बनाने के लिए सबूत के तौर पर अपनी चीज और ताला लगा जाते है।

उपेन्द्रनाथ अश्क ने अपनी कहानियों को सफल बनाने के लिए कई प्रकार के प्रयोग किये हैं। निष्कर्षतः उनकी कहानियों की प्रवाहमयीता और रोचकता कहानियों की कथावस्तु को आगे बढ़ाती रहती है। जिसमें शिल्प का आधिपत्य बनाने के लिए अंग्रेजी, उर्दू, तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग विशेष रूप से किया गया हैं। कहानियों में ऐसे शब्दों का प्रयोग करना आज एक प्रणाली बन चुकी हैं। उसी प्रकार अश्कजी की सभी कहानियाँ शिल्प की दृष्टि से सफल रही हैं।

कमलेश्वरजी की 'जिन्दा मुर्दे' कहानी में सदर अय्यूब खाँ नामक एक चरित्र है जो दिल्ली जाने की तैयारी कर रहा है। उस बार से नाखुश लोग अपनी नारजगी दिखाने के लिए कई नये पैतरे करते रहते है। उसी बीच भारत-पाकिस्तान के बीच लड़ाई हो जाती है। जिसमें पाकिस्तान सेना का ब्रिगेडियर शहीद हो जाता है और उसकी लाश भारत की सरहद में रह जाती है। भारतीय सैन्य बड़े आदर के साथ उसके अंतिम संस्कार करवाते है और उसकी फोटो खिंचवाकर उसके परिवार को भीजवाना चाहते है जिसको वह आखरी बार देख सके। फोटो खिंचवाने के लिए सेना का जवान उसी नाखुश आदमियों में से एक को बुलाते है और वह इसकी फोटो खिंचता है। कमलेश्वर ने प्रस्तुत कहानी में मार्मिक और संवेदनशील कथा को प्रस्तुत किया है। साथ ही भारतीय सैन्य की हमदर्दी को बताया है। कमलेश्वरजी ने प्रस्तुत कहानी में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। उन्होंने कई जगहों पर पात्रों के संवादों के जरिये पाकिस्तान के साथ-साथ चीन के मनसूबों का वर्णन किया हैं।

कमलेश्वरजी की 'जिन्दा मुर्दे', 'कितने पाकिस्तान', 'धूल उड़ जाती हैं' एवम् 'भटके हुएँ लोग' आदि कहानियों में कई स्थानों पर अरबी-फारसी और उर्दू शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। जैसे- सर-गर्निया, हलकों, सदर, चहलकदमी, अखबारनवासी, इजाजत, इसलाह, जनाब,

फिलहाल, उस-सा, मढ़ने कतई, हिदायत, दीगर पेशों, सदरे-पाकिस्तान, हवाबाज, जनानखाने, जनाब जुल्फिकार, ददान साज, कस्बे, कलईवाले, मुताबिक, निहायत, मुरदोंका, जिन्दा, कनस्तरनुमा, धडाके, बराबर, रूपरेलों, कराहते, तकरारे, फतह, ईनदाद, नवीसों, मुआयना ईत्यादि शव्दों का प्रयोग हुआ हैं। कहानी की कथावस्तु वास्तविक बनाने के लिए ऐसे शव्दों का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द हिन्दी के न होने के बावजूद यह हिन्दी भाषा में घूल-मिल गये है।

हिन्दी में अंग्रेजी शव्दों का प्रयोग अब स्वाभाविक बन गया है। आज-कल कुछेक अंग्रेजी शव्दों ने अपनी पकड जमा रखी हैं जिनका प्रयोग यथा-स्थान होता रहता है। कमलेश्वरजी की कहानी 'जिन्दा मूर्दे' में भी कई जगहों पर अंग्रेजी शव्दों का प्रयोग हुआ हैं। कहानी में भारतीय और पाकिस्तान फौज का उल्लेख किया गया है जिसके कारण कहानी में अंग्रेजी शव्दों का होना स्वाभाविक बन जाता हैं, क्योंकि सैन्य के लोग साक्षर होने के कारण उनके बोलने में अंग्रेजी भाषा के शव्द आहीं जाते हैं। जैसे की रिपोर्ट, मिटींग, काऊँशील, नेशनल बाजा, सपलाई, फोटो ग्राफर, प्रक्टिस, रिटायर, मिनट, डिवीजन, मील, रेडियों, फिल्ड मार्शल, पेट्रोल पार्टी, बोर्ड, फैमिली, फिल्ड कमाण्डर, ब्रिगेडियर, जीप, मशीनगन, टेंकों, लफटैन, रेग्युलर, कमाण्ड पोस्ट, स्टैंड, लैंस सैट, रेडी, स्माइल, प्लीज, वन. टू. थी. लेब इत्यादि शव्दों का प्रयोग हुआ हैं। इस प्रकार कमलेश्वरजी की 'जिन्दा मुर्दे' कहानी शिल्प की दृष्टि से एक सफल कहानी रहीं है।

कमलेश्वरजी की कहानियों में कहावतें-मुहावरें का प्रयोग भी बेजोड रहा हैं। जो कहानियों के शिल्प की सुन्दरता में चार चाँद लगा देता है। कमलेश्वरजी की 'जिन्दा मुर्दे', 'कितने पाकिस्तान', 'धूल उड जाती हैं' एवम् 'भटके हुए लोग' आदि कहानियों में प्रयुक्त कहावतें एवम् मुहावरें का प्रयोग बहुत कम मात्रा में हुआ हैं जैसे- 'नज्मो और नगमो से लेस रहना', 'गालों और बास्द से आसमान लाल पडना' आदि कहावतें-मुहावरें का प्रयोग हुआ हैं।

कमलेश्वरजी ने अपनी कहानियों में शैलिओं का प्रयोग बखुबी ढ़ंग से हुआ हैं जैसे- हास्यात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली एवम् वर्णनात्मक शैली। कमलेश्वरजी की कहानियों में हास्यात्मक एवम् व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ हैं, जैसे- "ढ़ोल मढ़ने के लिए खालों की

कमी जो पडेगी उसको हमारा दोस्त चीन पूरा करेगा क्योंकि खाली खींचने में उस-सा माहिर दुनिया में दूसरा नहीं है। तिब्बतियों की खाल खींचकर उसने यह साबित कर दिया है।"[१७] प्रस्तुत वाक्य में कहानीकार ने चीन के उपर करारा व्यंग्य किया है। चीन के इरादों को बताया है। जबकि कहानी के सैनिक पात्र के जरिये कहानीकार ने हास्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। जिसमें पाठक वर्ग के लिये पूरे पूरा मनोरंजन प्राप्त होता रहे। जैसे- "तभी सदरे पाकिस्तान की आवाज सुनाई पडी। हमारी फौज कहाँ है?' 'जी.....वो मुँह धोने के लिए गई है'। एक वजीर ने बताया।

'अभी हाजिर होती है।'

'और अनाब जुल्फिकार अली नजर नहीं आ रहे है?' सदर ने इधर-उधर देखकर पूछा।

'जी, यह अपने दांत बदलवाने गएँ है कल दोपहर ही कुछ चीनी दंदान साज आएँ है। वो उनकी बत्तीसी बदल रहे है।' वजीर ने बताया"[१८] कमलेश्वरजी ने अपनी कहानियों में भारतीय सैनिकों की उदार नीति और आत्मीयता को भी बताया हैं। एक पाकिस्तानी सैनिक की लाश का बड़े आदर के साथ उसका अंतिम संस्कार करते है। उसकी फोटो भी लेते है ताकि उसका परिवार उसे आखरी बार देख सके जैसे- "उसने अपने रूमाल से ब्रिग्रेडियर के नयुने के पास चिपके खून के प्रपोटों को साफ किया और उनकी नीचे झुकी हूई मूछों को ऊपर कर दिया।"[१९]

इस तरह से कमलेश्वरजी ने अपनी कहानियों के कथ्य और शिल्प को प्रवाहमयी, अलंकारिक, सुदृढ़ एवम् सौंदर्य प्रधान रूप प्रदान कर ने के लिए कहावतें-मुहावरें एवम् विविध शैलियों का प्रयोग किया हैं। इस प्रकार कमलेश्वरजी ने शिल्प का बखुबी प्रयोग करके अपनी भारत-पाकिस्तान विभाजन वाली सभी कहानियों को सफल बनाई हैं।

भीष्म साहनी हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक समस्या पर लिखनेवाले एक सफल कहानीकार रहे है। भीष्म साहनी ने 'निमित्त' और 'अमृतसर आ गया है' दोनों कहानियों में भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हिन्दू-मुस्लिम के बीच हुए दंगे फसादों की एवम् शरणार्थिओं की समस्या के बारे में लिखा हैं। 'अमृतसर आ गया है' कहानी में कहानीकार ने एक ऐसे आदमी की बात कहीं है जो बदले की भावना में इतना निर्दय हो जाता हैं कि वह बेगुनाह को मार बैठता है और उसके साथ कुछ ऐसे लोगों का वर्णन भी किया है जो उसे इस तरह का व्यवहार

करने के लिएँ उसे बढ़ावा देते है, उसे परेशान करते है और वह आदमी उसकी सज़ा किस बेगुनाह को देता है। जब की उनकी दूसरी कहानी 'निमित्त' में एक नोकर जो अपने मालिक को भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय वहाँ से बच निकलने के लिएँ कहता हैं क्योंकि वह मुस्लिम था। उसे वहाँ खतरा था और वह पटियाला जाना चाहता था वहाँ से उसे पाकिस्तान भेज दिया जानेवाला था। उसका मालिक हिन्दू था मगर वह उसकों सही-सलामत पहुँचाने के लिए सहायता करना चाहता है।

इस तरह से साहनीजी ने अपनी दोनों कहानियों में साम्प्रदायिक तनाव की समस्या को दिखाया हैं। दोनों कहानियाँ हिन्दू-मुस्लिम जाति के बीच हुए संघर्ष की होने के कारण भाषाशैली, भाषा में उर्दू, अरबी-फारसी, देशज आदि शव्दों का प्रयोग हुआ हैं तो कहीं जगहों पर अंग्रेजी शव्दों का भी प्रयोग किया हैं। कहानियों की भाषाशैली को रोचक, प्रवाहमय एवम् आकर्षक बनाने के लिएँ अलग-अलग भाषा के शव्दों का प्रयोग किया गया हैं, जैसे 'निमित्त' कहानी में अंग्रेजी शब्दों की तुलना में अरबी-फारसी, तद्भव और तत्सम शव्दों का प्रयोग अधिक हुआ हैं, जैसे- मढ़रिया, इन्कार, खालिस, मोहर, किस्मत, लिहाज, जिद्दी, हाजमा, वक्त, खस्ता, बुज़ुर्ग, दुहाई, जायकेदार, फैसला, व्याह, नतीजा, सेहत, शायद, बावजूद, उम्र, फिसादों, एहसान, पल्ले, हिफाजत, चुनाव, समझदार, धनी, ओज़ल, बावेला, वारदात, गद्दारी, किस्मत, मंज़िल, नजारा, वाक्या, ख्याल, बयान आदि जैसे शव्दों का प्रयोग किया गया हैं। तो कई जगहों पर साधारण बोल-चाल के शव्दों का प्रयोग हुआ है जैसे- चीनी शव्द- 'चाय' का प्रयोग हुआ है। अन्य शव्द- संकल्प, शिथिल, स्वयम्, पुरुषार्थ, निश्चेष्ट, तटस्थ, अग्निकाण्ड़, निहंग, शरणार्थियों, किरपाण आदि। उनके साथ-ही-साथ देशज शव्दों का प्रयोग भी हुआ हैं जैसे- पचडे, नेज़े, छबियाँ, मुसले आदि।

साहनीजी की दूसरी कहानी 'अमृतसर आ गया है' में भी उर्दू और अरबी-फारसी शव्दों का प्रयोग हुआ हैं, जैसे- अतीत, मजाक, तुल, आजाद, बगल, जालिम, खुदा कसम, खंजीर, तुख्न, गोश्त, नाते, शायद, किस्साखानी, जनाना, बेतकल्लुफी, तोंद, बदहवास, नेक, बख्तों, उलझने, तब्दीली, परिन्दा, बैगेरत, मर्द, पश्तों, मशक, नसवाद, जायजा, मुर्दे, शोले, फौरन, हाज़िर-जवाबी, मुमकिन, तसबीह, मादर, जनून, बुजदिल, ईर्द-गिर्द,

इतमीनान, पायदान, वास्ते, दुरुस्त, मुस्कान इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ हैं जबकि कई जगहों पर तत्सम्-तद्भव और देशज शब्दों का प्रयोग भी देखने को मिलता हैं, जैसे- खिल्ली, स्पष्टतः, समारोह, स्थूलकाय, मुद्रा, पृष्ठभूमि, तुक क्षमता, चीकट, चेष्टा, लांघती, ठिठोली, प्रतिक्रिया, स्तब्ध, शकित, अनभिज्ञ, स्तर, विभाजन, समतल, खराँटे, बीभत्स, लुढ़क, गठरी, चुमिल, निःस्तब्धता, लाल, कुमकुम आदि जैसे शब्दों का प्रयोग करके कहानी में वास्तविकता का भास होता हैं। साहनीजी की कहानियों में उर्दू, अरबी-फारसी, देशज एवम् तत्सम्-तद्भव शब्दों के साथ-साथ अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भी हुआ हैं, जैसे- प्लेट, फेक्टरी, लेबर, कार, पेट्रोल, ड्राईवर, ट्रक, केम्प, गेराज, टंकी, स्टेशन, प्लेटफार्म, फर्श, बास्कट, लाईन, इन्जाम, सिगनल जैसे अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग भीष्म साहनीजी ने अपनी भारत-पाकिस्तान विभाजनवाली दोनों कहानियों में किया हैं।

साहनीजी ने अपनी कहानियों को प्रवाहमयी बनाने के लिए और अलंकारिकता प्रदान करने के लिए कई जगहों पर कहावतें, मुहावरें और अन्य शैलियों का प्रयोग किया हैं। साहनीजी की कहानी 'निमित्त' में कहावते और मुहावरे का प्रयोग- 'नाक भी चढ़ाई और सिर झटका', 'मुँह में पानी भर आना', 'दाने-दाने पर मोहर होती है', 'अन्न-जल उठ जायेगा', 'आँखों में खून उतर आना', 'बला मोह ले ली' आदि जैसी कहावतें और मुहावरें का प्रयोग हुआ हैं। उनकी दूसरी कहानी 'अमृतसर आ गया है' में भी कई जगहों पर कहावतें और मुहावरे का प्रयोग हुआ हैं, जैसे कि- 'मुँह उठाये घुस आते है', 'कुल्हों के बल उठना', 'आव देखा न ताव', 'कटे पेड की भाँति गिरना' इत्यादि का प्रयोग हुआ हैं।

साहनीजी की कहानियों में भाषा के सरल प्रयोग के साथ सामान्य बोल-चाल के संवाद भी प्रयुक्त हुएँ है। कहानीकार ने अपनी कहानियों में कई जगहों पर बडे-बडे संवाद तो कई जगहों पर छोटे-छोटे संवाद प्रयुक्त किये हैं। कहानियों के संवाद सरल एवम् सहज हैं। जिसके साथ-साथ साहनीजी ने स्थान विशेष का महत्व बताते हुएँ उस स्थान विशेष की भाषा जो इस प्रांतीय विस्तार में बोली जाती हैं उसका प्रयोग भी कई जगहों पर किया हैं। जैसे की साहनीजी की कहानी 'अमृतसर आ गया है' में अमृतसर पंजाब राज्य में आया है तो इस कहानी में पंजाबी भाषा का होना स्वाभाविक है। जैसे- बुढ़िया बीच में बोल उठी- "वे जीण जोगये,

अराम नाल बैठो। वे रब्ब दियो बंदयो, कुज होश करो।"[२०] साहनीजी की दूसरी कहानी 'निमित्त' के कुछेक संवाद पूरी कहानी का केन्द्र बना हुआ हैं, जैसे कि- "यहीं तो मैं कह रहा हूँ ना, वह भी निमित्त, मैं भी निमित्त। मैंने उसे मोटर दी, शहर से बाहर भेज दिया, मेरा इतना ही निमित्त था, आगे शेरसिंह का निमित्त था, वह उसे किले के फाटक तक छोड आया। एक दिन बाहर गये और एक नहीं बचा। दूसरे दिन एक गया और अपने ठिकाने पर जा पहुँचा।"[२१]

निष्कर्षतः भीष्म साहनीजी ने भारत-पाकिस्तान विभाजन पर 'निमित्त' और 'अमृतसर आ गया है' ये दोनों कहानियाँ लिखी हैं जो कथ्य एवम् शिल्प दोनों ही दृष्टि से सफल कहानियाँ रहीं हैं। दोनों कहानियों में उर्दू, अरबी-फारसी, तद्भव-तत्सम, अंग्रेजी, देशज आदि शब्दों के साथ-साथ कहावतें-मुहावरें एवम् भाषाशैली का प्रयोग सही समय-समय पर होने के कारण पूरी कहानी की कथा पाठक वर्ग सरलता से समज सकता हैं और कहानी अपने उद्देश्य पर खरी उतर सके। साहनीजी की लिखने की यहीं कला उनकी कहानियों को शृंगारिकता प्रदान करती हैं।

हिन्दू-मुस्लिम समस्या भारत की एक साश्वत समस्या बन गई है। पाकिस्तान बन जाने पर भी इस समस्या का हल नहीं हुआ। **विष्णु प्रभाकर** ने इस समस्या को अपनी कहानियों के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं। प्रभाकरजी की 'मेरा वतन', 'अगम अथाह है', 'अधुरी कहानी', 'मेरा बेटा', 'तांगेवाला', 'सफर का साथी', 'वह रास्ता', 'पडोशी', 'आजादी', 'हिन्दू', 'मैं जिंदा रहूंगा' एवम् 'शमशू मिस्त्री' आदि कहानियों का मुख्य उद्देश्य भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हिन्दू-मुस्लिम समाज के बीच फैले तनाव का चित्रण करना हैं। कहानियों के शिल्प को सौंदर्य प्रधान बनाने के लिए प्रभाकरजी ने भाषा, बिंब-प्रतिक, अरबी-फारसी शब्दों, तत्सम्-तद्भव शब्दों, अंग्रेजी शब्दों, उर्दू शब्दों एवम् कहावतें-मुहावरें का प्रयोग किया हैं।

विष्णु प्रभाकर ने अपनी कहानियों में तत्सम, तद्भव, उर्दू और अरबी-फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया हैं, जैसे- दरवाजा, इम्तहान, मस्तिष्क, हतभाग्नी, एलान, बर्बर, उन्मेष, ख्याल, यकिन, प्रबंध, दस्तक, मफलर, शाश्वत, बेशक, तलखी, नफस, परहेज, जालिम, वाकिफ, बदन, तड़प, ईद, फरिसों, बुखार, अम्मी, ईदगाह, नमाज, असमंजस,

हरगिज, हुकूमत, तहमद, फज, निरीह, सहम, अनदस्नी, रिश्तेदार, काफिरों, खोफ, खुरेजी, तसवीर, मुसीबतजदा, राहगीर, मुर्दो, जायदाद, खुाद गारत, फजल, बे-जान, बहस, कस्बे, बन्दा, जनाब, कबाब, नुमाईश, बेशक, मुखबिरी, उसके साथ-साथ कई जगहों पर मूल संस्कृत के मगर हिन्दी भाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ हैं, जैसे- यन्त्रवत, प्रतिध्वनि, मृगतृष्णा, अन्तस्थल, नमस्कार, इन्द्रप्रस्थ, सहस्त्रों जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ हैं। मेरा वतन कहानी में कहानीकार ने एक ऐसी व्यक्ति की व्यथा बताई है जो अपने वतन को छोडना नहीं चाहता और उनकी यादों में धीरा रहता है। कहानी का स्थल लाहौर, पंजाब प्रांत एवम् अमृतसर बताया जाने के कारण इसमें उर्दू, अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग अधिक मात्रा में मिलता हैं।

प्रभाकरजी ने अपनी कहानियों में साधारण बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग किया है। प्रभाकर की सभी कहानियाँ हिन्दू-मुस्लिम साम्प्रदायिक तनाव पर लिखी गई होने कारण अरबी-फारसी और उर्दू भाषा के शब्दों और संवादों का प्रयोग होना स्वाभाविक है। जैसे कि- उनकी कहानी 'अगम अथा है' के कुछेक संवाद "तुम तो यूँ ही दुःखी होते हो जी। भगवान की माया कौन जानता है। हमारे गाँव के गोविंद पण्डित का बेटा सात साल में लौटा था।"[२२] अपने बेटे को देखने की, उसे मिलने की तडप यहाँ पर कहानीकार ने प्रकट की है तो उनकी दूसरी कहानी 'अधुरी कहानी' में भी कुछेक ऐसे संवाद प्रयुक्त हुए है। जैसे- "पारसाल अहमद का बाप जिन्दा था, तो घर में फुलवाडी खिली थी। वह अचानक एक दिन खुदा को प्यारा हुआ, घर वीरान हो गया। आज ईद आई है लेकिन..... ।"[२३] इस संवाद में ऐसे घर की स्थिति को बताया गया हैं जिसमें एक बच्चे का बाप मर चूका है और उसकी माँ पर सारी जिम्मेदारी आ जाती है। उनके घर की करूण स्थिति को कहानीकार ने यहाँ पर बताई है। कई जगहों पर ऐसे शब्द या वाक्य का प्रयोग हुआ है जो आम पाठक वर्ग को समझना मुश्किल हो जाता है। परंतु तत्कालीन परीवेश को उत्पन्न करने के लिये इन शब्दों का प्रयोग आवश्यक भी हैं।

प्रभाकरजी की 'मेरा बेटा' कहानी में डॉक्टर हसन के दादाजी और रामप्रसाद के संबंधों को लेकर लिखी गई हैं। जिसमें वह मुसलमान होने के कारण उनकी बातचीत में भी लेखक ने

उर्दू और अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग किया हैं। जैसे- अब्बा, आदमी, साब, फरिस्ते, हेवान, दस्ताने, बेगम, काफिर, तलखी, जखमी, इन्तहान, कागजात, शक्ल, इत्यादि।

इस तरह से प्रभाकरजी ने अपनी कहानियों में शिला को सुन्दर बनाने के लिए तद्भव, तत्सम्, उर्दू, फारसी और देशज शब्दों का प्रयोग बखूबी किया हैं। प्रभाकरजी ने अपनी कहानियाँ कमशः 'अगम अथा है', 'अधूरी कहानी', 'मेरा बेटा', 'मेरा वतन' आदि कहानियों में अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया हैं। जैसे- बर्थ, स्कूल, ट्रंक, होल्ड़ाल, मेज, केम्प, स्टेशन, इन्चार्ज, प्ररोफेसर, रेड़ियों, सिगरेट, प्लेट फोर्म, स्विच, फायर, हेल्मेट, मशीनगन, राईफल, लॉन, मी-लार्ड, ओवरकोट, एग्लों-इण्डियन, कालेज, होमगार्ड, पुलिस, मिस्टर आदि जैसे शबदों का प्रयोग हुआ हैं। इस प्रकार अपनी कहानियों को रोचक एवम् वास्तविकता के धरातल पर लाने के लिएँ कहानीकार ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया हैं।

प्रभाकरजी ने अपनी कहानियों को सौंदर्य प्रधान बनाने के लिए कहावतें-मुहावरें का प्रयोग भी किया हैं। जैसे उनकी कहनी 'अगम अथाह' में 'सब रास्ते रोम में जाते है' - कहावत और 'जैसे कोई मरघट में हँस पडा' तथा 'प्राण होमना' मुहावरें का प्रयोग किया हैं। उनकी अन्य कहानी 'मेरा वतन' में भी कहावतें और मुहावरे का प्रयोग हुआ हैं। जैसे 'कुदरत के घर पे देर हैं पर अंधेर नहीं'। और 'जिन्दगी न जाने क्या खेल खेलती है' आदि। प्रभाकरजी की एक और कहानी 'अधूरी कहानी' में 'सिर पिटाना', 'दिल का बैठना', 'फूला फूला घर जाना' इत्यादि कहावतें-मुहावरें का प्रयोग हुआ हैं। प्रभाकरजी की 'मेरा बेटा' कहानी में भी कहावतें एवम् मुहावरे का प्रयोग हुआ हैं, जैसे- 'दिल काँप उठना', 'प्यारा होकर भी कडवा होना'। कहानीकार ने कहावतें और मुहावरे का प्रयोग करके अपनी कहानियों को और अधिक प्रभावक बनाई है। मुहावरें और कहावतों के साथ-साथ कहानी को सरल, सुबोध एवम् प्रवाहमयी बनाने के लिए कहानीकार ने कई जगहों पर व्यंग्यात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। साथ ही संवादों में कई जगहों पर बडे-बडे संवाद प्रयुक्त हुए है, तो कई जगहों पर छोटे-छोटे संवाद भी प्रयुक्त हुए है। जैसे- उनकी 'मेरा वतन' कहानी में- "जी हा। वकील था। हाईकार्ट का बड़ा वकील। लाखों रुपयों की जायदाद छोड आया है।' 'अच्छा जी।"[२४] कई बार अपरिचित शब्द या अपने पाण्डित्य को बताने के चक्कर में कहानीकार उस कहानी को रस हीन बना

देता है जो कहानी पाठक वर्ग के समझ में नहीं आती और वह शिथिल बन जाती हैं। परंतु विष्णु प्रभाकर ने अपनी कहानियों के कथ्य और शिल्प दोनों को अच्छी तरह से सवाँरा हैं।

विष्णु प्रभाकर की कमशः 'मेरा वतन', 'अगम अथाह है', 'अधुरी कहानी', 'मेरा बेटा', 'तांगेवाला', 'सफर का साथी', 'वह रास्ता', 'पडोशी', 'आजादी', 'हिन्दू', 'मैं जिंदा रहूंगा' एवम् 'शमशू मिस्त्री' आदि कहानियों का मुख्य विषय भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय हुएँ साम्प्रदायिक तनाव का रहा हैं। इस हिसाब से उनकी कहानियों में उर्दू, अरबी-फारसी, तत्सम, तद्भव आदि शव्दों का प्रयोग ज्यादात्तर हुआ हैं। कहानीकार ने उनके अलावा कहानीकार ने अंग्रेजी, देशज और कहावतें-मुहावरें का प्रयोग करके कहानियों के शिल्प को अधिक सुन्दर बना दिया हैं। प्रभाकरजी ने अपनी कहानियों के संवाद को इस प्रकार से सजाया है कि जैसे कहानी पढ़ने से पाठक वर्ग को वास्तविकता का भास होता है और पढ़ते-पढ़ते उस कहानी में वह खो जाते है। यही प्रभाकरजी और उनकी कहानियों की सही पहचान् हैं।

संदर्भ सूची

(१) अज्ञेय की संपूर्ण कहानियाँ-२	अज्ञेय	पृष्ठ- ७५
(२) वही,		पृष्ठ- ९३
(३) वही,		पृष्ठ- ९२
(४) वही,		पृष्ठ- ५३
(५) वही,		पृष्ठ- ६३
(६) वही,		पृष्ठ- ४०
(७) वही,		पृष्ठ- ८०
(८) वही,		पृष्ठ- ८५
(९) मेरी प्रिय कहानियाँ	चन्द्रगुप्त विद्यालंकार	पृष्ठ- ८१
(१०) वही,		पृष्ठ- ८३
(११) मेरी प्रिय कहानियाँ	आचार्य चतुरसेन शास्त्र	पृष्ठ- ७५
(१२) वही,		पृष्ठ- ७६
(१३) सिक्का बदल गया	डा. नरेन्द्र मोहन	पृष्ठ- ६८
(१४) वही,		पृष्ठ- ७०
(१५) वही,		पृष्ठ- ७१
(१६) भा. वि. : हिन्दी की श्रेष्ठ कहानिया	डा. नरेन्द्र मोहन	पृष्ठ- ४४
(१७) वही,		पृष्ठ- १०१
(१८) वही,		पृष्ठ- १०२
(१९) वही,		पृष्ठ- १०९
(२०) सिक्का बदल गया	डा. नरेन्द्र मोहन	पृष्ठ- ३०
(२१) वही,		पृष्ठ- २०
(२२) मेरा वतन	विष्णु प्रभाकर	पृष्ठ- २३
(२३) वही,		पृष्ठ- ९६

(२४) सिक्का बदल गया डॉ. नरेन्द्र मोहन पृष्ठ-१७०